हमारे प्रिय बिहारी भाई–बहनो,

बापू की तस्वीर हम–आप देखते हैं और उनके प्रति सभी सम्मान रखते हैं। बापू ने अपने जीवन, आचरण, रहन–सहन और विचारों से पूरी दुनिया को बेहतर बनाने का संदेश दिया है। मेरे साक्षरता कार्यकर्त्ता उनके कुछ संदेशों को लेकर आपके घर दस्तक दे रहे हैं।

मेरा मानना है कि बापू के एक भी विचार को यदि हम अपने जीवन में उतार लें, तो हम बदलेंगे, हमारा समाज बदलेगा और सम्पूर्ण बिहार में सकारात्मक बदलाव की बयार बहेगी। अनुरोध है कि अपने परिवार के सदस्यों के साथ इसे पढ़ें और इसे जीवन में उतारने का प्रयास करें। शुभकामनाओं के साथ,

आपका,
नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार

गांधी जी के तीन बंदर

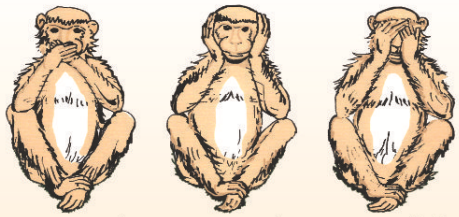

बुरा मत कहो | बुरा मत सुनो | बुरा मत देखो

आइये, अपने गाँव को गांधी के सपनों का गाँव बनायें।

- हम मिलकर गाँव का विकास करें।
- गाँव में स्वच्छता के कार्यक्रम चलाएँ।
- अपने गाँव को खुले शौच से मुक्त करायें।
- गाँव में नशा–मुक्ति को पूरी तरह लागू करें।
- गाँव में लोगों को रोजगार के अवसर मिलें।
- अधिक–से–अधिक पेड़ लगाएँ।
- सब पढ़ें, आगे बढ़ें, शांति–भाईचारा कायम करें।
- 'विकसित बिहार के 7 निश्चय' बिहार के गाँवों को गांधी के सपनों का गाँव बनाने का ठोस कार्यक्रम है, इसमें सहयोग करें।

जन शिक्षा निदेशालय, शिक्षा विभाग
विकास भवन, नया सचिवालय, जवाहर लाल नेहरू मार्ग,
पटना – 800015
दूरभाष संख्या–0612–2215413, 2202301
इमेल : slmabihar@gmail.com

बिहार सरकार

बापू आपके द्वार

चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी 2017–18

प्यारे बिहारवासियो,

100 साल पहले मैं बिहार आया था। यहाँ के ही कुछ भाइयों के बुलावे पर। बिहार एक ऐतिहासिक भूमि है। यहाँ आकर जीवन, सच्चाई, नेह, श्रम, त्याग, समर्पण का जो पाठ मैंने सीखा- वह दुनिया की किसी किताब में भला कहाँ मिलता ? राजकुमार शुक्ल, पीर मुहम्मद मूनिस, जे.बी. कृपलानी, ब्रजकिशोर बाबू, गोरख बाबू, राजेन्द्र प्रसाद से लेकर यहाँ चम्पारण के वे सभी किसान आज याद आ रहे हैं, जिन्होंने मुझे सत्याग्रही बनने में मजबूती दी।

100 साल बाद बिहार ने फिर मुझे बुलाया है- चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष पर। मन हर्षित व आह्लादित है। खुद को रोक नहीं पा रहा हूँ। कुछ बातें करने की चाह जाग गयी है। हो सके तो इनमें से कुछ को तुम अपने साथ रखना और उस पर अमल करना। उन्हें दूसरों तक भी पहुँचाना।

कहाँ से शुरू करूँ.....? 100 साल एक बड़ा अंतराल होता है, लेकिन तब भी मैं लोगों को याद हूँ, यह बड़ी बात है। जानता हूँ, समय के साथ आदमी की मुश्किलें भी अधिक हुई हैं। तुम्हारे आस-पास स्नेह-प्रेम कम हुआ है। जीवन की चुनौती बढ़ी है। ऐसे में कुछ बातें करूँ तुमसे....? तो ध्यान से सुनो...

- जिस परिवर्तन को तुम दुनिया में देखना चाहते हो, उसकी शुरुआत खुद से करो।
- चलो, सुबह का पहला काम ये करें कि इस दिन के लिए संकल्प करें- मैं दुनिया में किसी से डरूँगा नहीं - मैं केवल भगवान से डरूँ। मैं किसी के प्रति बुरा भाव न रखूँ, मैं किसी के अन्याय के समक्ष झुकूँ नहीं। मैं असत्य को सत्य से जीतूँ और असत्य का विरोध करते हुए, मैं सभी कष्टों को सह सकूँ।
- सत्य तथा न्यायपरायणता से ऊँचा कोई धर्म नहीं है।
- मैं मरने को तैयार हूँ, लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं कि किसी को मारने को तैयार होऊँ।
- आँख के बदले आँख पूरे विश्व को अंधा बना देगी। कमजोर कभी माफ नहीं कर सकता। माफ करना तो ताकतवर की विशेषता है।
- विश्वास को हमेशा तर्क से तौलना चाहिए। जब विश्वास अंधा हो जाता है, तो मर जाता है।
- पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरी करने के लिए नहीं। आदमी की खुशी तो संतोष में है। जो असंतुष्ट है, उसके पास कितना भी कुछ हो, वह अपनी इच्छाओं का दास बना रहेगा।
- अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है, जो मन को साफ तथा चमकदार बना देता है।
- इन्सान अक्सर वही बनता है, जो वह अपने बारे में सोचता है। यदि सोचने लगूँ कि मैं कुछ नहीं कर सकता, तो वाकई कुछ भी करने में असमर्थ रहूँगा, लेकिन जब मुझे यह विश्वास होगा कि मैं कर सकता हूँ, तो मुझमें वह करने की योग्यता भी आ जाएगी, जो शुरू में मेरे पास नहीं थी।
- थोड़ा-सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है।
- शिक्षा से मेरा तात्पर्य शरीर, मस्तिष्क और आत्मा तीनों का विकास है। यह हमें अंधकार से उजाले की ओर ले जाती है। शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होता है।
- ये पृथ्वी, हवा, जल-जमीन हमारे ऊपर बच्चों का ऋण है। जिस रूप मे मिला है, कम-से-कम वैसा ही आगामी पीढ़ी को सौंपो।
- शराब से शरीर नष्ट होता है, आत्मा भ्रष्ट होती है। इसका सेवन करने वाला हैवान हो जाता है।
- दहेज की शर्त रखना शिक्षा और देश को बदनाम करना ही नहीं, स्त्री जाति का अपमान है।
- अगर गाँव नष्ट हो जाएँ, तो हिन्दुस्तान भी नष्ट हो जाएगा। हमें ग्रामीण सभ्यता को जारी रखते हुए इसे मान्य दोषों से मुक्त करना होगा।
- हमारे देश में भंयकर गरीबी और बेकारी है। हमें स्वीकार करना चाहिए कि इस स्थिति के लिए उपेक्षा और अज्ञान ही जिम्मेदार है।
- मैं तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब तुम पर अहम हावी हो, तो इस कसौटी को आजमाना। जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, सोचना, तुम्हारे कदम उसकी कुछ सहायता कर सकते हैं क्या?
- सात सामाजिक बुराइयाँ हैं- सिद्धान्त रहित राजनीति, परिश्रम रहित धनोपार्जन, विवेक रहित सुख, चरित्रशून्य ज्ञान, सदाचार रहित व्यापार, संवेदना रहित विज्ञान एवं वैराग्य विहीन उपासना। इन सामाजिक बुराइयों से बचो।

बातें तो बहुत हैं, अंत में एक और बात कहूँगा...

ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरनेवाले हो। ऐसे सीखो कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।

बस अभी इतना ही,

तुम्हारा,
बापू